ISSN 2394-4366
Vol. 9 , Issue-35+36, July-December, 2023

ABHINAV GAVESHNA

(Multi Disciplinary Quarterly International Refreed/Peer Reviewed Research Journal)

An International Refreed/Peer Reviewed Research Journal of Humanities
Arts, Literature, Culture, Commerce, Science & Social Science

Chief Editor :
Dr. Ranju Kushwaha

Editor :
Dr. Swati Purwar

अभिनव गवेषणा

(मल्टी डिसिप्लिनरी क्वार्टरली इण्टरनेशनल रेफ्रीड/पियर रिव्यूड रिसर्च जर्नल)
वर्ष 9, अंक-35+36, जुलाई-दिसम्बर, 2023

Received: 25 Jan., 2023; Accepted: 28 Feb., 2023; Published: July - December, 2023,
ISSN:

शिक्षा और योग दर्शन : एक विवेचन

डॉ. आशा अवस्थी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर–
बी. एड. विभाग,
डॉ. वी. एस. आई. पी. एस. इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, किदवई नगर, कानपुर – 208011 (उ.प्र.)

ई–मेल:
asha.awasthi1977@gmail.com

दर्शनोपनिषद में अष्टांग योग का वर्णन है मण्डल ब्राह्मण... यद्यपि अष्टांगयोग का वर्णन है इसमें यमों की संख्या 4 ... बताई गयी है। इसके पश्चात आसनादि षडंगयोग का वर्णन ... तृतीय खण्ड में योग के दो भेद– तारक और अमनस्क ... उत्तम कहा गया है।

योगतत्वोपनिषद में योग के चार प्रकार–मन्त्र, लय, ... राजयोग बताये गये हैं।

ध्यानबिन्दुपनिषद में प्राणादि दस वायु अजपाजाप, ... वर्णन हठयोग ग्रंथों के अनुरूप ही किया गया है। इसमें कहा ... साधक कुम्भक में स्थित हो नाभि में प्राण अपान को ... समाधिस्थ हो जाता है। योगतत्वोपनिषद में हृदय को ही प्राण... केन्द्र कहा गया है शाण्डिल्योपनिषद में प्राणावात्मक प्राणायाम ... निर्देशित है।

क्षुरिकोपनिषद में कहा गया है कि 101 नाड़ियों में सुषुम्ना, ... पिंगला मुख्य है। त्रिशिखब्राह्मणोपनिषद में नाड़ियों की संख्या ... बताई गई है। प्राणायाम के भेदों का भी यहाँ निर्देश है।

दर्शनोपनिषद में नाड़ियों का वर्णन, कुण्डलिनी का स्थान ... का वर्णन है। ध्यानबिन्दुपनिषद में मूलाधार, स्वाधिष्ठान, ... सहस्त्रार इन चार प्रकार के चक्रों का वर्णन है। इड़ा, पिंगला ... के अतिरिक्त गान्धरी, हस्तिजिह्वा, पुषा, यशस्विनी, अलम्बुषा, ... शंखिनी– इन दस नाड़ियों का उल्लेख है शक्ति चालनी पर प्रका... हुए योगकुण्डल्योपनिषद में कहा गया है कि अपने स्थान में ... कुण्डलिनी को ले जाना ही शक्तिचालन है। इसके दो ... सरस्वतीचालन और प्राणारोध। योगचूड़ामणि उपनिषद में चक्रों ... दलों का वर्णन है।

विश्वब्रह्मणोपनिषद में दो प्रकार के ध्यान का वर्णन ... सगुण और निर्गुण। दर्शनोपनिषद में ध्यान प्रकरण में ... निविशेष दो प्रकार के ध्यान वर्णित है।

योगकुण्डलयोपनिषद में ध्यान को ब्रह्म सिद्धि का ... है। इसी प्रकार शाण्डिल्योपनिषद में ध्यान द्वारा नाड़ी शुद्धि ... अवस्था की प्राप्ति का उल्लेख किया गया है इस प्रकार ... योगउपनिषदों में ध्यान के महत्व को दर्शाया है।

श्वेताश्वतर उपनिषद में प्राणायाम साधना पर ... गया है। इसमें कहा गया है कि जिस प्रकार सारथी दुष्ट ... नियंत्रित कर उसे अनुशासन में रखता है, उसी प्रकार ... प्राणायाम की साधना द्वारा निश्चल धीर की ओर ... मनोनिग्रह तभी सम्भव है, जब योगी प्राणायाम की ...

ISSN : 2394-4366

Received: 27 Jan., 2023; Accepted: 28 Feb.,-2023, Published: July - December, 2023, Issue

स्वामी दयानन्द एवं स्वामी विवेकानन्द जी के शिक्षा तथा योग सम्बन्धी विचार

–डॉ. अरुणा बाजपेई
असिस्टेन्ट प्रोफेसर–
बी.एड. विभाग,
डॉ. बी. एस. आई. पी. एस. इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, किदवई नगर, कानपुर – 208011 (उ.प्र.)

ई–मेल:
aruna29bajpai@gmail.com

सारांश

विद्यार्थी को विद्यालय में आते ही गायत्री मंत्र का उपदेश करके संध्योपासना, स्नान, आचमन एवं प्राणायाम आदि क्रियाएं सिखायी जानी चाहिए। स्नान से शरीर के बाहरी अवयवों की शुद्धि होती है। स्नान भोजन के पूर्व किया जाना चाहिए। प्राणायाम से आंतरिक शुद्धि होती है और ज्ञान का प्रकाश बढ़ता है। इससे मन आदि इंद्रियों के दोष दूर होकर निर्मल हो जाते हैं। केवल पुरुषों को ही नहीं, बल्कि स्त्रियों को भी योगाभ्यास करना चाहिए। स्वामी दयानन्द के शिक्षा दर्शन में आदर्शवाद प्रकृतिवाद और यथार्थवाद का सफल समन्वय परिलक्षित होता है। वे सच्चे अर्थ में मानवतावादी थे। वे मात्र स्वदेश का ही नहीं, बल्कि समस्त विश्व का कल्याण चाहते थे। उनकी शिक्षा–प्रणाली भारत की दार्शनिक और आध्यात्मिक परम्परा के अनुरूप थे। वे स्वदेशी के समर्थक थे और पाश्चात्य सस्कृति के अन्धानुकरण के विरुद्ध थे। जहाँ उन्होंने एक ओर भारत को पाश्चात्य विज्ञान और प्रवृत्तिवाद अपनाने के लिए कहा, वहाँ उन्होंने दूसरी ओर ब्रह्मचर्य और अध्यात्म के प्राचीन आदर्शो को शिक्षा में सबसे प्रमुख स्थान दिया। युवक–युवतियों के लिए पाठ्यक्रम निर्धारित करते समय उन्होंने साहस, आत्मविश्वास, एकाग्रता, अनासक्ति तथा उच्च नैतिक चरित्र के गुण निर्माण करने पर विशेष रूप से ध्यान दिया। उन्होंने शिक्षकों को शिक्षा देने के कार्य को व्यवसाय बनाकर एक मिशन के रूप में लेने की सलाह दी। उन्होंने सब कहीं संतुलित और समन्वयवादी दृष्टिकोण रखा।

स्वामी दयानन्द : एक परिचय –

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती भारतीय समाज की अलौकिक विभूति थे। स्वामी दयानन्द का जन्म गुजरात प्रदेश के मोरबी राज्यार्गत टंकारा नामक स्थान में सन् 1824 ई. में हुआ था। स्वामी जी के बचपन का नाम 'मूलजी' अथवा 'मूलशंकर' था। इनके पिता का नाम कृष्ण जी था। पाँच वर्ष की आयु में इनको संस्कृत–अध्ययन आरम्भ कराया गया था। आठ वर्ष की आयु में इनका यज्ञोपवीत–संस्कार सम्पन्न हुआ। चौदह वर्ष की आयु में ही मूलशंकर को वेदांग और पाणिनिकृत व्याकरण का यथेष्ठ ज्ञान हो गया। इक्कीस वर्ष की आयु तक ये पिता के घर पर ही रहे। इस उम्र तक उन्होंने संस्कृत के कई मूल ग्रंथों का अभ्यास किया तथा समस्त यजुर्वेद को कंठस्थ कर निरूक्त, पूर्व–मीमांसा और कर्मकाण्ड के कतिपय

ISSN : 2394-4366

Received: 30 Jan., 2023; Accepted: 28 Feb.,-2023, Published: July - December, 2023, Issue

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन एवं श्री अरविन्द के शिक्षा तथा योग सम्बन्धी विचार

– डॉ. अनीता शर्मा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर–
बी. एड. विभाग,
डॉ. वी. एस. आई. पी. एस. इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, किदवई नगर, कानपुर – 208011 (उ.प्र.)

ई–मेलः
sharma.anita904@gmail.com

सारांश

"जीवन का लक्ष्य सांसारिक आनन्द उठाना नहीं है, बल्कि आत को शिक्षित करना है।" "यही शिक्षा का लक्ष्य है।" "शिक्षा का वास्तवि लक्ष्य मनुष्य को आन्तरिक सत को जानने में सहायता देना है।" भौति सफलता शिक्षा का लक्ष्य नहीं है। केवल डिग्री की शिक्षा सच्ची शिक्षा न है। वास्तविक शिक्षा तो मनुष्य की आन्तरिक प्रकृति पर आधारित हो चाहिए। उसका लक्ष्य आत्मविकास है।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् – एक परिचय –

सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन् उन समकालीन भारतीय दार्शनिकों में थे जिन्होंने शिक्षक के रूप में और शिक्षा–संस्थाओं में विभिन्न पदों पर ल काल तक कार्य करके जीवन की समस्याओं को निकट से देखा और समझा। विभिन्न भारतीय और पाश्चात्य विश्वविद्यालयों में विषयों के प्राध्यापक के रूप में और अनेक विश्वविद्यालयों में उपकुलपति की हैसियत से डॉ. राधाकृष्णन् ने शिक्षा की प्रक्रिया, लक्ष्य तथा विभिन्न पहलुओं का गंभीर अध्ययन किया।

डॉ. राधाकृष्णन् ने विश्व के सभी महान् दर्शनों का गहरा अध्ययन किया। जहाँ एक ओर वे भारतीय दर्शन में गहरी अन्तर्दृष्टि रखते थे, वहीं दूसरी ओर यूनानी, आधुनिक पाश्चात्य तथा समकालीन दर्शन में भी उनकी पैठ किसी से कम नहीं थी। उनका जन्म 5 सितम्बर, 1888 को मद्रास में हुआ। उन्होंने मद्रास क्रिश्चियन कालेज में शिक्षा प्राप्त की और मद्रास के प्रेजीडैन्सी कालेज में दर्शन के प्राध्यापक नियुक्त हुए। इसके बाद वे मैसूर विश्वविद्यालय में दर्शन के प्राध्यापक रहे। ऑक्सफोर्ड के मैनचेस्टर कालिज में वे तुलनात्मक धर्म के उपटन प्राध्यापक रहे। सन् 1939 से 1948 तक वे बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के उपकुलपति रहे।

सन् 1952 में ही ये भारतीय गणतंत्र के उपराष्ट्रपति चुने गये। सन् 1957 में ये फिर से उपराष्ट्रपति चुने गये। सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन् को देश–विदेश में अनेक डिग्रियों और उपाधियों से विभूषित किया गया है। भारतीय विश्वविद्यालयों से इन्हें डी.लिट्. की उपाधियाँ दी गयीं।

सन् 1954 में भारत सरकार ने इन्हें भारत रत्न की उपाधि से विभूषित किया। उन्होंने भारतीय दर्शन और धर्म के विभिन्न पहलुओं पर महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखे।

राधाकृष्णन् ने मानव–प्रकृति की व्याख्या करने में सर्वांगीण दृष्टिकोण अपनाया है। मानव एक जटिल संरचना है, जिसमें शरीर, मन,

ISSN : 2394-4366
Received: 02 Feb., 2023; **Accepted:** 28 Feb.,-2023, **Published:** July - December, 2023, Issue

विभिन्न प्रमुख दार्शनिकों का शिक्षा और योग के प्रचार–प्रसार में योगदान

डॉ. सीमा मिश्रा
सिस्टेन्ट प्रोफेसर–
एड. विभाग,
सी. एस. आई. पी. एस. इंस्टीट्यूट
प्रोफेशनल स्टडीज, किदवई
कानपुर – 208011 (उ.प्र.)
मेल.
awasthi4@gmail.com

सारांश

भावातीत ध्यान योग के सर्वेक्षण विदेशी वैज्ञानिक, मनोविज्ञान तथा चिकित्सा सम्बन्धी उच्चकोटि की पत्रिकाओं के प्रकाशित हो चुके हैं, जैसे साइंटिफिक अमेरिका, एसोसिएशन, न्यू साइटिफिक साइंस डाइजेस्ट, टुडेज हेल्थ आदि में भारतीय योग को इतनी अधिक वैज्ञानिक मान्यता, इसके पूर्व कभी नहीं प्राप्त हुई थी। इसका श्रेय हमारे प्रमुख दार्शनिकों की युगान्तरकारी प्रतिभा को ही है। अनेक संस्थाएं 'भावातीत ध्यान' पर शोधकार्य कर रही हैं। अनेक देशों की सरकार ने भावातीत ध्यान की उपयोगिता को स्वीकार करके नागरिकों के लिए इसके शिक्षण की व्यवस्था की है। अनेक राज्यों ने इस विद्यालयों के पाठ्यक्रम का अंग बना दिया गया है। जो बहुत लाभकारी सिद्ध हुआ है। भावातीत ध्यान योग के सर्वेक्षण विदेशी वैज्ञानिक, मनोविज्ञान तथा चिकित्सा सम्बन्धी उच्चकोटि की पत्रिकाओं के प्रकाशित हो चुके हैं, जैसे साइंटिफिक अमेरिका, एसोसिएशन, न्यू साइटिफिक साइंस डाइजेस्ट, टुडेज हेल्थ आदि में भारतीय योग को इतनी अधिक वैज्ञानिक मान्यता, इसके पूर्व कभी नहीं प्राप्त हुई थी।

विभिन्न प्रमुख दार्शनिकों का शिक्षा और योग के प्रचार–प्रसार में योगदान–

योग दर्शन तथा शिक्षा के विकास में योग के विभिन्न आचार्यों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया तथा भारतवर्ष में योग के प्रचार–प्रसार में इनका योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

स्वामी कुवल्यानन्द का योगदान –

स्वामी कुवल्यानन्द का वास्तविक नाम जे. जी. गूणे था। इनका जन्म 30 अगस्त, 1883 ई. में हुआ था। शारीरिक शिक्षा और योग के क्षेत्र में उनका योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वह सन 1916–1923 तक खन्देश शिक्षा परिषद से सम्बद्ध रहे। सन् 1920 में कुवल्यानन्द को नेशनल कालेज, अमैनर में प्रधानाचार्य चुना गया। इस अवधि में उन्होंने शारीरिक शिक्षा तथा शारीरिक शिक्षा में योगसन को रखने के लिए शासन को प्रोत्साहित किया। सन् 1937 में फिजिकल एजूकेशन महाराष्ट्र शासन के चेयरमैन चुने गये तब इनको योग शिक्षा पर कार्य करने का काफी मौका मिला। इनके प्रयास से महाराष्ट्र सरकार ने शारीरिक शिक्षा में योगसन तथा योग की अन्य क्रियाओं को सम्मिलित करने का प्रयास किया। इस तरह स्वामी कुवल्यानन्द के प्रभाव से शिक्षा में योग का प्रवेश हुआ।

UGC - CARE LISTED

ISSN: 0974-8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

प्रधानसम्पादकः
प्रो.रमेशकुमारपाण्डेयः
कुलपतिः

सम्पादकः
प्रो.शिवशङ्करमिश्रः

सहसम्पादकः
डॉ.ज्ञानधरपाठकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
केन्द्रीयविश्वविद्यालयः
नवदेहली-16

शोध–प्रभा (ISSN : 0974-8946)
(A REFERRED & PEER- REVIEWED QUARTERLY RESEARCH JOURNAL)

AN OVERVIEW OF OER's: AN ICT INITIATIVES BY INDIAN GOVERNMENT, ITS IMPORTANCE AND CHALLENGES

Anju Singh
Research Scholar, Integral University,Lucknow

Dr. Smita Srivastava
Associate Professor, Integral University, Lucknow

ABSTRACT:

Open educational resources are the digital resources available for the public domain with the concept of open license that is for reuse &and remixing. OERs are developed along with the concept of digitally available pedagogical resources that support the collaborative development of educational material. It is easy to access, open for all, and reused by others. This paper includes various platforms of open educational resources launched by GOI along with the importance and challenges of OERs in the Indian context based on the review's studies under the same concept. Open educational resources avail a vast variety of educational resources like audio, video, quizzes, and motivational learning exercises, providing a diverse platform for the learners.

Keywords: OER (Open Educational Resources), ICT (Information Communication Technology)

INTRODUCTION

In India, education is the fifth pillar of the nation. It is the subject that describes the nation's growth and development. We all know the glory of Nalanda's and Takshila educational institutes which perfectly describe the showcase of the Indian education system. But by the time, due to cultural and sociological changes, our education system diminished its charm. Before independence, our education was highly affected by the rulers. Due to this the glory of Indian minds shaded out.

But for the time being, we realize that education is the mirror of any nation's growth. Most of the communities and commissions suggested strong recommendations to regenerate our rich education system with the pace of the world. National Knowledge Commission (NKC), UGC, and the National Policy of Education 2020 (NEP 2020) supported digital education and its integration with teaching and learning. This paper concentrates on secondary data and reviews of OERs and their connectivity to the current education system collected from various online sources. This paper also includes the importance and challenges of OERs in Indian content. [1]

ORIGIN OF OERS IN THE INDIA CONTEXT

From the introduction of ET in 1972 during the four-year plan, TV, and recognized the important role of ICT in education. After that MHRD launched the ICT@school scheme in Dec 2004 to provide an ICT-embedded environment & skills to interpret learning with technology.

UGC CARE LISTED PERIODICAL
ISSN : 2278 - 6864

Education and Society

Since 1977

Vol-48, Issue-1, No.-01, January-March : 2024

Indian Institute of Education

J. P. Naik Path, 128/2, Kothrud, Pune-411 038

Education and Society (शिक्षण आणि समाज) ISSN: 2278-6864
(UGC Care Journal) Vol-48, Issue-1, No.-01, January-March : 2024

IMPACT STUDY OF DIKSHA PORTAL AS AN OPEN EDUCATIONAL RESOURCES FOR SECONDARY SCHOOL EDUCATION IN LUCKNOW

ANJU SINGH Research Scholar, Faculty of Education, Integral University, Lucknow
Dr. SMITA SRIVASTAVA Associate Professor, Department Of Education, Integral University, Lucknow

ABSTRACT
Research shows that regarding the achievement of science students, nothing is more important than their professors. We look up to teachers as unsung heroes. It's not feasible to overstate the breadth and complexity of student backgrounds and learning levels in an Indian classroom; every one of our teachers has to deal with this daily. Much work has been occurring at the federal and state levels to help educators more effectively support their kids' learning and grow with open educational resources in recent years. To positively impact DIKSHA on all of the country's teachers, it is now important to consider the widespread adoption of new ideas, programs, and innovations. Opportunities for professional development are necessary for teachers and simple access to learning and teaching resources if we want our students to have a good education.

Keywords:
DIKSHA Portal, Open Educational Resources, Science Education, Secondary School Education

INTRODUCTION
With a focus on individual learning, a global trend is evolving towards increased personalization and a more flexible style of instruction. There has been an emphasis on the use of instructive skills to advance the excellence of teaching across all grade levels in the National Policy on Education (NPE–1986), the National Curriculum Framework (NCF–2006), as well the State Curriculum Framework (SCF–2010). It placed a premium on incorporating digital tools into the classroom. A combination of instructors' computer usage and the industry's lightning-fast technological advancements paved the way for classroom PCs. Digital learning has grown more user-friendly with the evolution of educational technology, allowing instructors to try their hand at developing E-content using digital equipment. DIKSHA and its transmission over the internet has recently emerged as one of the most essential systems for communicating information.

The most probable method now is utilizing open educational resources to facilitate digital learning resources. All content the Information/Knowledge Providers provide is publicly viewable on the website. There is a current need for content creation in digital media. The material can be more effectively and cheaply disseminated to the target audience using the most influential channel in ICT: the Internet. When used properly, electronic information may be a potent and efficient teaching tool. The versatility and accessibility of e-content make it a great tool for educators working with a wide range of pedagogical approaches. With the rise of model-based learning, e-content has emerged as a cutting-edge instructional strategy. The latest fad in schooling is online education. Electronic learning, or e-learning, is a kind of interactive learning where students have access to course materials online and get immediate feedback on their progress. The main difference between this and CBT and CAT is that the former uses the Internet to provide students with access to course materials while the latter uses it to keep tabs on their progress. Most of the time, e-learners can connect with their instructors online.

Electronic learning, however, places a greater emphasis on the organization and accessibility of the learning materials than on communication per se. The phrase "E-learning" encompasses many methods and uses, including learning on the web, learning on computers, online classrooms, and digital collaboration. Additional advantages for pupils include less time spent studying and increased preservation. The world of online learning has its own set of benefits: Training that is easy for students Permits students to effort at their stride Involvement captivates users. To provide easy access to reference resources. There is a method called e-learning and a result called e-content. In response to

1/10